एक परिचय

कभी न कभी बाइबल के अधिकतर छात्र इस प्रश्न पर विचार करते ही हैं कि ''क्या बाइबल परमेश्वर का सही और निर्भ्रान्त वचन है?'' ऐसे ही कई दूसरे प्रश्नों को भी इसी प्रकार से संक्षिप्त किया जा सकता है: ''क्या हम यीशु और कलीसिया के सम्बन्ध में विशेष और सही जानकारी देने, मसीह की शिक्षा की एकमात्र अगुआई और नीतियों तथा नैतिकता का अपेक्षित मापदण्ड देने के लिए बाइबल पर भरोसा कर सकते हैं?''

बाइबल परमेश्वर की ओर से मनुष्य जाति को दी गई थी। युगों से यह पीढ़ी दर पीढ़ी आगे सौंपी जाती रही है और इसे बड़े ही भरोसे के साथ सम्भाल कर रखा गया है। इसलिए, जब भी इसका सही अनुवाद और सही ढंग से व्याख्या होती है, तो इसका संदेश परमेश्वर का अपेक्षित नैतिक मापदण्ड होता है। इसके साथ नया नियम मसीह की विशेष शिक्षा है। इन पाठों में, हम बाइबल के परमेश्वर के आत्मा से होने और इसके अधिकार पर चर्चा करेंगे।

''परमेश्वर की प्रेरणा'' की उदार परिभाषा

बाइबल कुछ चुने हुए लोगों में पवित्र आत्मा के द्वारा उन पर परमेश्वर के विचार प्रकट करके और उन्हें बिना किसी गलती के ईश्वरीय सच्चाई के उपयुक्त शब्दों का इस्तेमाल करने के लिए परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा दी गई थी। हिन्दी बाइबल में ''प्रेरणा'' शब्द यूनानी और लातीनी शब्दों से लिया गया है जिसका क्रमश: अर्थ है ''परमेश्वर के आत्मा से'' या ''परमेश्वर के श्वास से'' (*theopneustos*) ''श्वास डालना'' (*in* and *spiro*)। परमेश्वर ने बाइबल के लेखकों में अपना आत्मा डाला और, उसके द्वारा, उन्हें बाइबल को लिखने में अगुआई दी। इस प्रकार ''परमेश्वर की प्रेरणा'' की परिभाषा उस प्रक्रिया के रूप में दी जा सकती है जिसमें परमेश्वर ने मनुष्यों में अपने आत्मा का श्वास डालकर, उन्हें बिना किसी गलती के ईश्वरीय सत्य को ग्रहण करने तथा दूसरों को बताने के योग्य बनाया। बाइबल के लेखकों ने उन तथ्यों के बारे में भी लिखा जिन्हें वे जानते थे और जिनका उन्हें परमेश्वर की प्रेरणा के बिना पता नहीं था। ज्ञात तथ्य जो उन्होंने लिखे वे उन्हें व्यक्तिगत अनुभव, उपलब्ध दस्तावेज़ों या मौखिक परम्परा से मिले थे। इन लोगों ने जो कुछ लिखा, उसके अधिकतर भाग का ज्ञान उन्हें परमेश्वर के प्रकाशन से पहली बार मिला था। उन्होंने चाहे ज्ञात तथ्यों के बारे में लिखा या प्रकाशन के बारे में, परमेश्वर की प्रेरणा ने उन्हें बिना

किसी गलती के उसे हम तक पहुंचाने में अगुआई की।

परमेश्वर की प्रेरणा से होने के बाइबल के दावे

बाइबल स्वयं भी परमेश्वर की प्रेरणा से होने का दावा करती है। यह कहने का कोई अर्थ नहीं है कि, ''मैं बाइबल पर विश्वास करता हूं क्योंकि यह परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई है और मेरा यह विश्वास इसलिए है क्योंकि यह ऐसा दावा करती है।'' बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने के लिए प्रचलित तर्क पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। परन्तु, बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने के दावे इसके ईश्वरीय मूल से होने की बात का एक महत्वपूर्ण भाग हैं।

पुराने नियम के लिए दावे

पुराने नियम में परमेश्वर का प्रकट वचन होने के 3,800 से अधिक दावे किए गए हैं। यह दावा पुराने नियम के संस्करण में हर पृष्ठ पर औसतन 2-1/2 से 3 बार किया गया है। यह दावा पंचग्रन्थ में यह कहते हुए कि, ''यहोवा ने मूसा से कहा'' या यह संकेत देते हुए कि मूसा यहोवा की बातें दोहरा रहा था, 420 बार किया गया है (निर्गमन 17:14; 19:6, 7; 20:1; 24:4, 7; 35:29)। भजन संहिता 119 में लेखक ने पवित्र शास्त्र को चौबीस बार ''यहोवा का वचन'' कहा था। इसी लेखक ने वचन में इस दावे की विभिन्न 175 अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल किया है। भविष्यवक्ताओं का दावा था कि उन्होंने वही लिखा और कहा जो प्रभु ने उनसे कहा था। यह दावा 120 बार यशायाह ने, 430 बार यिर्मयाह ने, 329 बार यहेजकेल ने, 53 बार आमोस ने, 27 बार हाग्गै ने और 53 बार जकर्याह ने किया है।

यीशु ने यह ऐलान किया कि पुराने नियम में परमेश्वर बात कर रहा था। उसने फरीसियों से कहा, ''क्योंकि परमेश्वर ने कहा था, कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना: और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए'' (मत्ती 15:4)। इस संयुक्त उद्धरण में (देखिए निर्गमन 20:12; 21:17; व्यवस्थाविवरण 5:16; लैव्यव्यवस्था 20:9), यीशु ने लिखी हुई इन बातों के परमेश्वर का वचन होने की घोषणा की थी। उसने उत्पत्ति 2:24 से उद्धृत करते हुए कहा, ''क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, कि इस कारण मुनष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?'' (मत्ती 19:4, 5)।

आरम्भिक चेले यह भरोसा व्यक्त करते थे कि भजन 2:1 दाऊद ने लिखा था और इसे परमेश्वर के लिए मानते थे, जो पवित्र आत्मा की ओर से बोल रहा था। वे प्रार्थना करते थे कि, ''हे स्वामी, तू वही है जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया। *तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा,* कि अन्यजातियों ने हुल्लड़ क्यों मचाया? और देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं?'' (प्रेरितों 4:24, 25)। प्रेरितों 13:33-35 में, पौलुस ने यशायाह 55:3 और भजन संहिता 16:10 के वाक्य को

परमेश्वर की बात माना।

पौलुस ने पुराने नियम के लिए ''पवित्र शास्त्र'' शब्द का इस्तेमाल किया और कहा कि यह परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया था (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। पतरस ने ऐलान किया, ''पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी की अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे'' (2 पतरस 1:20, 21)।

नये नियम के लिए दावे

मसीह और प्रेरितों की शिक्षाओं को ''परमेश्वर का वचन'' कहा जाता है या उन्हें स्वर्ग से अगुआई माना जाता है। यीशु के प्रचार करने के समय बाइबल में बताया गया है, कि ''... भीड़ उस पर गिर पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, ...'' (लूका 5:1)। यीशु को स्वयं भी अनन्त सत्य घोषित किया जाता है (यूहन्ना 14:6)। उसने कहा था, ''... जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूं'' (यूहन्ना 8:28)। विदाई की अपनी प्रार्थना में, यीशु ने कहा था ''क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुंचा दी मैंने उन्हें उनको पहुंचा दिया और उन्होंने उनको ग्रहण कर लिया ... मैंने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है ...।'' (यूहन्ना 17:8-14)।

अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा करके यीशु ने प्रेरितों को ''स्वर्ग के राज्य की कुंजियां'' देने की प्रतिज्ञा की थी। उसने इन कुंजियों की व्याख्या कलीसिया के प्रबन्ध के लिए उन नियमों के रूप में की जिनसे उन्हें बान्धने और खोलने का अधिकार मिलना था (मत्ती 16:18, 19)। उसने उन्हें इस स्वर्गीय संदेश को बताने के लिए पवित्र आत्मा देने का वायदा किया था (यूहन्ना 14:26)। इस वायदे में उसने ''वह मेरी गवाही देगा और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो'' कहने के साथ ''सत्य का आत्मा'' भी जोड़ा (यूहन्ना 15:26, 27)। बाद में उसने वायदा किया, ''परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा'' (यूहन्ना 16:13, 14)। इन प्रतिज्ञाओं में पांच बातें थीं: उन्हें सब बातें सिखाना, वह सब स्मरण दिलाना जो यीशु ने उनसे कहा था, यीशु की गवाही देना, सब सत्य में उनकी अगुआई करना और उन पर वे बातें प्रकट करना जो होने वाली थीं। रेन पेच ने ध्यान दिलाया कि इसमें नये नियम के प्रत्येक भाग के परमेश्वर की प्रेरणा से होने की बात है अर्थात सुसमाचार की पुस्तकों में-''पवित्र आत्मा ... तुम्हें ... जो कुछ मैंने तुम से कहा है वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा''; प्रेरितों के काम में-''वह मेरी गवाही देगा और तुम भी गवाह हो''; पत्रियों में-''सत्य का आत्मा ... मेरी महिमा करेगा, ...''; प्रकाशितवाक्य में-''आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।''[1]

यीशु के इस वायदे के थोड़ी देर बाद ही लूका ने इसके पूरा होने के बारे में लिखा।

उसने प्रेरितों के विषय में घोषणा की, ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, ... वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे'' (प्रेरितों 2:1-4)। इस प्रकार परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं पूरी हुई थीं। उसके फलस्वरूप बोले और लिखे गए संदेश को परमेश्वर के वचन के रूप में जाना जाता है। प्रेरितों 8:14; 11:1; 12:24; 13:7, 44; 15:35 में इस तथ्य की पुष्टि की गई है।

पौलुस ने परमेश्वर की प्रेरणा के अनिश्चित न होने का दावा किया था। यह मानते हुए कि कोई परमेश्वर के सत्य को वैज्ञानिक ढंग या दर्शन शास्त्र से नहीं सीख सकता, उसने इस प्रकार से कहा:

> परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखीं, और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, बरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है। मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता केवल परमेश्वर का आत्मा। परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं (1 कुरिन्थियों 2:9-13)।

पौलुस ने आगे कहा, ''क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी; ...'' (1 कुरिन्थियों 11:23)। बाद में पौलुस ने थिस्सलुनीके के मसीही लोगों से कहा, ''... कि ... दुख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा हियाव दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएं'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:2)। उसने यह भी कहा, ''... कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया: और वह तुम में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:13); ''क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं ...'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:15)।

इब्रानियों की पत्री में सम्पूर्ण नये नियम को परमेश्वर का वचन घोषित किया गया है: ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके, इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, ...'' (इब्रानियों 1:1, 2)।

''परमेश्वर की प्रेरणा'' पर निकट दृष्टि

परमेश्वर की प्रेरणा की अनेक थ्योरियां बाइबल के स्पष्ट और अस्पष्ट दोनों कथनों के विचार से मेल नहीं खाती हैं। बाइबल एक ईश्वरीय/मानवीय पुस्तक है। कई लोगों को केवल बाइबल के लिखने वाला ही दिखाई देता है अर्थात वे बाइबल को मनुष्य की पुस्तक के रूप में देखते हैं। अन्य लोग आत्मा को लेखक को लिखने के लिए कहता दिखाते हैं; वे बाइबल को पूरी तरह से ईश्वरीय पुस्तक के रूप में देखते हैं। एक लेखक को मेज़ पर बैठकर लिखते हुए और पवित्र आत्मा को उस पर सत्य प्रकट करते और लिखने में उसकी निगरानी करने की दोनों ही बातें सही हैं। अपनी शब्दावली और शैली में प्रत्येक लेखक ने उन तथ्यों के साथ जिन्हें वह पहले से ही जानता था, वे सत्य भी लिखे जो आत्मा द्वारा प्रकट किए गए थे। उसने केवल वही विचार और बातें लिखीं जिन्हें लिखने की स्वीकृति आत्मा ने उन्हें दी थी। परन्तु, उसने वह संदेश लिखा जो विशेष परिस्थितियों के लिए आवश्यक होना था।

बाइबल अपने सारे भागों के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का दावा करती है। पौलुस ने घोषणा की थी कि, ''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। पौलुस ने व्यवस्थाविवरण 25:4 से और लूका 10:7 से उद्धृत करके दोनों को ''शास्त्र'' कहा (1 तीमुथियुस 5:18)। इस प्रकार उसने यह पुष्टि करते हुए कि परमेश्वर की प्रेरणा पुराने और नये दोनों नियमों को लिखने में दी गई थी, इसके सम्पूर्ण व परमेश्वर की प्रेरणा से होने का दावा किया।

बाइबल यह भी दावा करती है कि परमेश्वर ने उन शब्दों के चयन पर भी नियन्त्रण रखा जिनमें उसका सत्य व्यक्त किया गया था। दावा करने की बात तो नहीं है कि बाइबल को लिखवाया गया, परन्तु यह बात सत्य है कि इसे ईश्वरीय निरीक्षण में ही लिखा गया था। यिर्मयाह ने कहा, ''तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को छुआ; और यहोवा ने मुझ से कहा, देख, मैंने अपने वचन तेरे मुंह में डाल दिए हैं'' (यिर्मयाह 1:9)। परमेश्वर की प्रेरणा से होने का यही दावा इन पदों में किया गया है: निर्गमन 4:10, 14, 15; व्यवस्थाविवरण 18:18-20; 2 शमूएल 23:1, 2; यशायाह 1:10; यहेजकेल 2:7; 3:4, 10; दानिय्येल 10:9-11; होशे 1:1; योएल 1:1. यीशु ने अपने चेलों को यह प्रतिज्ञा देकर भेजा:

> तुम मेरे लिए हाकिमों और राजाओं के साम्हने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिए पहुंचाए जाओगे। जब वे तुम्हें पकड़वाएं तो यह चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या कहेंगे: क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा। क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है (मत्ती 10:18-20)।

पौलुस ने स्पष्ट दावा किया था कि बाइबल बोलकर लिखाई गई है:

> परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, *कि* हम उन बातों को जानें, *जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं* (1 कुरिन्थियों 2:12, 13)।

बाइबल संकेत देती है कि शब्दों का चयन, संज्ञाओं द्वारा संख्या (एक वचन या बहु वचन) का संकेत, और क्रियाओं के काल इतने महत्वपूर्ण हैं कि उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा ही नियन्त्रित किया जाना चाहिए था। नये नियम के कई लेखकों ने एक ही शब्द के अर्थ, संख्या या काल को पूरे आलोचनात्मक तर्कों का आधार बनाया था। यीशु ने पुनरुत्थान सम्बन्धी व्याख्या क्रिया के काल के आधार पर की। उसने पिता को यह कहते हुए उद्धृत किया, ''मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं,'' और दावा किया कि इसका अर्थ है कि वे लोग मरे हुए नहीं हैं (मत्ती 22:32)। यह दिखाने के लिए कि उत्पत्ति 12:7 में परमेश्वर ने मसीह की बात की थी, पौलुस ने ध्यान दिलाया कि परमेश्वर ने बहुवचन शब्द ''वंशों'' के बजाय एक वचन शब्द ''वंश'' का इस्तेमाल किया है (गलतियों 3:16)।

परमेश्वर की प्रेरणा से होने के कुछ प्रमाण

प्रमाण बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने के दावे का समर्थन करते हैं। संयुक्त प्रमाण दिखाते हैं कि बाइबल के अस्तित्व की एकमात्र पर्याप्त व्याख्या यही है कि इसका मूल ईश्वरीय है अर्थात यह परमेश्वर की ओर से दी गई है।

बाइबल का बना रहना, अनुवाद तथा वितरण

बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का समर्थन करता एक प्रमाण इसके बने रहने, अनुवाद और वितरण की अद्‌भुत बात है। बाइबल समय के विनाशकारी तत्वों में भी कायम रही। मूसा के समय से लेकर अब तक (लगभग 3,500 वर्ष) सड़न तथा लापरवाही से बचकर रहना किसी पुस्तक के लिए सचमुच आश्चर्यजनक है। लिखी जाने वाली पुस्तकों की छपाई तथा उनके वितरण पुराने ही रूप में होने के कारण रुकावट पड़ गई कि उन्हें पूरी तरह से हाथ से तैयार किया गया था और इसलिए उनकी संख्या अधिक नहीं हो पाई। इन प्राचीन पुस्तकों को आग, तूफानों, कीड़ों, सड़न, लापरवाही, धूल मिट्टी, और यहां तक कि शत्रुओं का सामना भी करना पड़ा। इतनी सारी हस्तलिपियों, अनुवादों, उद्धरणों के साथ तथा और इतनी सारी गवाहियों के साथ बाइबल का टिका रहना अपने आप में एक आश्चर्यकर्म है।

बाइबल ने बहुत बड़ा सताव और आलोचनाएं झेली हैं। रोमी सम्राटों के दिनों से लेकर

हाल ही के कम्युनिस्ट बहुल क्षेत्रों में बाइबल को नष्ट करने के बहुत प्रयास हुए हैं। इसके ऊपर आक्रमण किया गया, इसे प्रतिबन्धित किया गया और जलाया गया। यह पुस्तकों में से यह शहीद पुस्तक है, परन्तु अपने प्रभाव और वितरण में विजयी रूप से जीवित है और लगातार बढ़ती जा रही है। प्राचीन दार्शनिकों सेलसस और पोरफिरी की विनाशकारी आलोचना के बावजूद बाइबल ने अपने अस्तित्व के एक हज़ार वर्ष पूरे कर लिए। लोगों में यह पुस्तक किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक सम्माननीय हो गई है। एक हज़ार वर्षों के बाद, थॉमस हॉबेस (1588-1679) और ब्रुक स्पिनोज़ा (1632-1677) ने बाइबल पर आलोचनात्मक प्रहार किए। फिर जीन आस्ट्रक (1684-1766) की आलोचना के तीव्र प्रहारों की झड़ी लग गई जिसने हर बात को बड़ी सूक्ष्मता से देखने की ओर ध्यान खींचा। बरनार्ड रम्म ने कहा है, ''किसी भी अन्य पुस्तक को इतना चीरा, काटा, छाना, बारीकी से जांचा, व बदनाम नहीं किया गया।''[2] यद्यपि बहुत से लोगों को सताकर बाइबल पढ़ने से वंचित किया गया, और निस्संदेह बहुतों ने आलोचना का विरोध करके अपने विश्वास के कारण अपनी जान तक गवां दी, परन्तु बाइबल आज भी संसार की सबसे अधिक छपने वाली पुस्तक है।

बाइबल संसार की सबसे पहले और अधिक अनुवादित होने वाली पुस्तक भी है। (इब्रानी भाषा के पुराने नियम का यूनानी संस्करण अर्थात सप्तति अनुवाद, लगभग 250 ई.पू. में हुआ था।) इसका अनुवाद संसार की किसी भी पुस्तक से अधिक भाषाओं तथा उपभाषाओं में हो चुका है। ये तथ्य इस दावे का समर्थन करते हैं कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई पुस्तक है।

बाइबल की कहानी की एकता तथा निरन्तरता

यह जानने के लिए कि दवाई की बोतल के बाहर जिस बात का दावा किया गया है, उसमें वही दवाई है या नहीं केवल एक ही तरीका है और वह है कि उस दवाई की जांच की जाए। बाइबल पढ़ने वाला व्यक्ति परखकर ही जान सकता है कि बाइबल सचमुच में परमेश्वर का वचन है या नहीं।

पवित्र बाइबल, एक बड़ा आश्चर्यकर्म। बाइबल के लेखों की एकता और निरन्तरता संकेत देती है कि उन्हें एक अलौकिक मन की अगुआई में तैयार किया गया था। कल्पना कीजिए कि भिन्न-भिन्न देशों में रहने वाले चालीस लोगों ने जो अलग-अलग व्यवसाय में थे, जिनकी अलग-अलग शैक्षणिक पृष्ठभूमि थी, और जो पन्द्रह शताब्दियों के विभिन्न अन्तरालों में हुए थे उनमें से हर एक ने कहानी की कुछ पंक्तियां ही लिखीं। फिर कल्पना कीजिए कि इन पंक्तियों को एक सुन्दर और खुबसूरत कहानी का रूप देने के लिए एक-एक करके मिलाया गया, जिससे प्रत्येक पंक्ति अगली पंक्ति से जुड़कर एक पूरी कहानी बनाती हो। यदि ऐसा हो जाए, तो यह स्पष्ट होगा कि इन लिखने वालों को निर्देश एक ही मन ने दिया था।

इसके लिखने में लगा समय तथा लोग। लगभग चालीस लेखक जो जीवन के लगभग हर क्षेत्र से थे-मूसा, जो कि एक राजनीतिक अगुआ था, मिस्र में पढ़ा-लिखा था; यहोशू जो

सैनिक जनरल था; सुलैमान जो राजा था; आमोस, जो एक चरवाहा था; दानिय्येल, जो प्रधानमंत्री था; नहेमायाह, जो साकी था; लूका, जो वैद्य था; मत्ती, जो टैक्स इकट्ठा करने वाला था; पतरस, जो एक मछुआरा था; पौलुस, जो एक रब्बी था; और कई अन्यों ने छियासठ पुस्तकें या पत्रियां लगभग पन्द्रह सौ वर्षों के दौरान लिखीं जिसमें लगभग साठ पीढ़ियां लग गईं थीं। उन्होंने भिन्न-भिन्न स्थानों से अर्थात मूसा ने, जंगल में; यिर्मयाह ने काल कोठरी में; दानिय्येल ने एक पहाड़ी पर और महल में; पौलुस ने जेल की चारदीवारी में; लूका ने जल और थल मार्ग में यात्रा करते हुए; यूहन्ना ने पतमुस के टापू में निर्वासन के समय लिखा। उन्होंने इब्रानी, यूनानी और अरामी भाषा में लिखा था। उन्होंने ऐसी सामग्री लिखी जिसमें सैकड़ों विवादित विषय थे। इन लेखकों ने मनुष्य के आरम्भ, उसके पाप में गिरने, छुटकारे और अनन्त निवास के बारे में उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक उसकी कहानी एक सुर में लिखी है।

एक केन्द्रीय सत्य या कहानी विकसित हुई। जिस प्रकार से बाइबल का एक केन्द्रीय सत्य विकसित हुआ और कायम है, वह इस बात का प्रमाण देता है कि यह परमेश्वर का वचन है। फ़लसफ़ा तथा धर्म (मज़हब) सामान्यत: किसी एक व्यक्ति के जीवन काल में ही एक दिमाग़ का कार्य होता है। जब ऐसा होता है, तो कोई आसानी से समझ सकता है कि एकता को कैसे बनाए रखा जाता है और विचारों को एक दूसरे के साथ समरूपता से कैसे जोड़ा जाता है। बाइबल का विकास इस प्रकार से नहीं हुआ है। यह किसी मनुष्य के दिमाग की खोज नहीं है, न ही यह किसी एक व्यक्ति के जीवन काल के समय तैयार हुई। बाइबल सैकड़ों वर्षों तक बहुत से लोगों के प्रयासों का परिणाम है। इसकी कहानी विकास के एक चरण से दूसरे की ओर अर्थात आदम और हव्वा के गिरने से लेकर अदन में खोए हुए जीवन के वृक्ष को पाने के लिए कलीसिया के विकास तक आगे बढ़ती है। यह दासता, संयुक्त राज्य, विभाजित राज्य और फिर से दासता के समयों से एक-एक करके बनती है। यह बढ़ना यीशु के जन्म, उसके जीवन, उसकी मृत्यु, उसके जी उठने, आत्मा के भेजने से तथा कलीसिया की स्थापना और स्थायित्व से जारी रहता है। उत्पत्ति की पुस्तक में स्वर्गलोक छिन जाता है और प्रकाशितवाक्य में वह पुन: मिल जाता है। बाइबल स्वतन्त्र लेखों का संग्रह नहीं है, बल्कि एक ही कहानी बताते एक दूसरे पर निर्भर लेखों की एक पुस्तक है। एक अद्‌भुत एकता इन सबको बान्धकर इकट्ठे रखती है।

नये नियम में पुराना नियम जारी रहता है। पुराने और नये नियम का बन्धन तब स्पष्ट हो जाता है जब कोई ध्यान देता है कि पुराना नियम मसीह की प्रतिज्ञा के साथ समाप्त होता है और नया नियम उसके आने से आरम्भ हो जाता है। मलाकी अपने पाठकों को मसीह और उसके आगे आने वाले का मार्ग आशापूर्ण देखने के लिए यह कहकर छोड़ देता है, ''देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हां वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है'' (मलाकी 3:1)। सेना के यहोवा को यह भी कहते हुए उद्धृत किया गया है, ''देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक

दिन के आने से पहिले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। और वह माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को सत्यानाश करूं'' (मलाकी 4:5, 6)। सुसमाचार के चार वृत्तांत मसीह और उसके पहले आने वाले को प्रस्तुत करके वहां से आगे ले चलते हैं जहां पर मलाकी ने छोड़ा था। मरकुस यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के आने को ''परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ'' कह कर प्रस्तुत करता है (मरकुस 1:1)। लूका कहता है कि यूहन्ना प्रभु के लिए योग्य लोगों को तैयार करने के लिए एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ से आया था (लूका 1:17)।

नये नियम में पुराने नियम का पूरा होना। ''यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो'' जैसे वाक्य बार-बार दोहराकर पुराने और नये नियम के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट किया जाता है (मत्ती 1:22; देखिए 2:5, 15, 17, 23; 3:3; 4:14)। बाइबल के आरम्भिक भाग मसीह और उसके राज्य की आशा में लिखे गए थे। बाद के भाग यह जानकर लिखे गए थे कि ये बातें वास्तविक होने जा रही थीं। पतरस ने यह घोषणा की थी:

> इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यवक्ताओं ने बहुत ढूंढ़-ढांढ़ और जांच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यवाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहिले ही से मसीह के दुखों की और उनके बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। उन पर प्रगट किया गया, कि वे अपनी नहीं बरन तुम्हारी सेवा के लिए ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया: तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं (1 पतरस 1:10-12)।

इसकी एकता, इसका आगे बढ़ना और निरन्तरता इतने महान हैं कि इसके द्वारा यह पुष्टि होती है कि बाइबल एक अलौकिक तथा नियन्त्रण करने वाले दिमाग़ की उपज है। इन गुणों में यह भी ज़रूरी है कि पुराना और नया दोनों नियम एक साथ ही खड़े हों या गिरें।

संसार के केवल एक विवादपूर्ण विषय पर दस महान साहित्यिक, ऐतिहासिक और फिलॉस्फिकल लेख लेने हों, तो उनमें भी एकता नहीं मिलेगी। निश्चय ही अपनी पसन्द के दस विषयों में एक लेख दूसरे के साथ मेल खाता नहीं मिलेगा!

सारांश

बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई है और जो लोग इसकी खोज करने के इच्छुक हैं यह उन्हें उस तथ्य के लिए विश्वास योग्य प्रमाण देती है। यह हर पीढ़ी को मसीह और उसके उद्धार का अपना संदेश बताने के लिए जीवित है।

पाद टिप्पणियां

[1]रेल पेच, *द इंस्पिरेशन एण्ड ऑथोरिटी ऑफ़ स्क्रिप्चर,* अनु. हेलन आई. नीदम (शिकागो: मूड़ी प्रैस, 1969), 90. [2]बरनार्ड रम्म, *प्रोटैस्टेंट क्रिश्चियन एविडेन्सस* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1957), 233.

यह पाठ *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* से, बिल लैम्बर्ट के ''द न्यू टैस्टामेंट ऐज़ स्क्रिप्चर'' का एक संक्षिप्त रूप है। हार्डिंग यूनिवर्सिटी, सरसी, आरकैंसा की अनुमति से छापा गया।